ज़ाते-लासानी

ज़ाते-लासानी

zāt-e-lāsānī

The Unique Nature of al-Masih

by W. Miller
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

क्या आप कभी किसी से मिले हैं जो सचमुच लासानी हो? हम हर रोज़ मुख़तलिफ़ क़िस्म के लोगों से मिलते हैं। उन में बाज़ बड़े क़ाबिल, बाज़ बड़े बहादुर और बाज़ बड़े ख़ूबसूरत होते हैं। लेकिन ऐसा कोई नहीं है जो हक़ीक़त में लासानी हो मासिवा एक शख़्सियत के। तक़रीबन 2,700 साल हुए हज़रत यसायाह ने इस शख़्सियत के बारे में यह पेशगोई की,

> हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख़्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, क़वी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। उसकी हुकूमत ज़ोर पकड़ती जाएगी, और अमनो-अमान की इंतहा नहीं होगी।
> (सहायफ़े-अंबिया, यसायाह 9:6-7)

यह हज़रत ईसा के अलावा कोई और कौन हो सकता है जिनकी आमद इस पेशगोई के 750 साल बाद हुई। आप जैसी अज़ीम शख़्सियत न कभी इस दुनिया में थी और न होगी। आप किस तरह लासानी हैं?

लासानी विलादत

हज़रत आदम से लेकर आज तक जितने इनसान पैदा हुए हैं वह माँ और बाप दोनों से पैदा हुए, लेकिन अल-मसीह बग़ैर जिस्मानी बाप के पैदा हुए। आपको अकसर इब्न मरियम कहा जाता है क्योंकि आप कुँवारी मरियम से पैदा हुए थे। यों इंजील जलील में लिखा है,

> देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा। (इंजील मुक़द्दस, मत्ती 1:23)

और जिब्राईल फ़रिश्ते ने बीबी मरियम से फ़रमाया,

> रूहुल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा। (इंजील जलील, लूक़ा 1:35)

क्या दुनिया में कोई और शख़्सियत है जो इस अजीब तरीक़े से दुनिया में वारिद हुई हो?

आमद की लासानी पेशगोइयाँ

मुतअद्दिद अंबियाए-कराम मसलन हज़रत दाऊद, हज़रत यसायाह, हज़रत मीकाह और हज़रत दानियाल ने हुज़ूर अल-मसीह की आमद की पेशगोई की और बताया कि वह बैत-लहम में पैदा होंगे। साथ साथ उन्होंने उनके मोजिज़ात, दुख उठाने, उनकी गुनाहगारों के बदले में मौत, क़ियामत और अबद तक सलतनत की तरफ़ इशारा किया।[1]

लासानी इसमत

इस जहान में बेशुमार नेक लोग गुज़रे हैं। लेकिन जितने वह ज़ाहिदो-पारसा थे, उतना ही उन्हें अपनी गुनाहगारी का एहसास था, इसलिए वह अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगा करते थे। लेकिन हज़रत ईसा ने कभी भी बारी तआला से अपने गुनाहों

[1] 2 समुएल 7:12-17; ज़बूर 2:6-9; 22:14-18; यसायाह 7:14; 9:6-7; 11:1-9; दानियाल 7:13-14; मीकाह 5:1-2

की मग़फ़िरत की दरख़ास्त नहीं की, इसलिए कि आपसे कभी भी गुनाह सरज़द न हुआ और न कभी आपने अल्लाह की नाफ़रमानी की। एक मरतबा आपने अपने मुख़ालिफ़ीन से फ़रमाया,

> क्या तुम में से कोई साबित कर सकता है कि मुझसे कोई गुनाह सरज़द हुआ है?
> (इंजील जलील, यूहन्ना 8:46)

आपके शागिर्दों ने भी इसकी तसदीक़ की। मसलन शागिर्द पतरस ने फ़रमाया,

> उसने तो कोई गुनाह न किया, और न कोई फ़रेब की बात उसके मुँह से निकली। जब लोगों ने उसे गालियाँ दीं तो उसने जवाब में गालियाँ न दीं। (इंजील जलील, 1 पतरस 2:22-23)

लासानी प्यार

हर नेक आदमी बदी और नापाक चीज़ों से नफ़रत करता है। चूँकि हज़रत ईसा पाक थे इसलिए वह गुनाह से नफ़रत करते थे। लेकिन आप गुनाहगारों से दूर रहने की बजाए उनसे मेल-जोल रखते, उनके साथ खाते-पीते, बातें करते और उन्हें तालीम देते थे। जब

वह तौबा करते तो वह उन्हें क़बूल कर लेते थे। जब मज़हबी लोगों ने नुकताचीनी की तो आपने फ़रमाया,

> मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ। (इंजील जलील, मरक़ुस 2:17)

माफ़ करने का लासानी इख़्तियार

हज़रत ईसा के सिवा कोई भी गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार नहीं रखता। जब एक मफ़लूज गुनाहगार को हज़रत ईसा के हुज़ूर लाया गया तो आपने पहले उसके गुनाह माफ़ किए और फिर उसे शिफ़ा बख़्शी। वहाँ पर मौजूद मज़हब के इमामों ने हुज़ूर अल-मसीह पर फ़ौरन कुफ़र का फ़तवा सादिर कर दिया और कहा कि सिर्फ़ अल्लाह ही गुनाह बख़्श सकता है। हज़रत ईसा ने जवाब दिया कि मुझे ज़मीन पर आदमियों के गुनाह बख़्शने का इख़्तियार हासिल है। अपने इस इख़्तियार को साबित करने के लिए उन्होंने मफ़लूज को अच्छा कर दिया।[1] इसी तरह आपने एक बदकार औरत को भी बख़्श दिया।[2] आपका यह इख़्तियार लासानी था।

[1]मरक़ुस 2:1-12
[2]लूक़ा 7:36-50

लासानी मोजिज़ात

गो हज़रत मूसा, हज़रत इल्यास और दीगर अंबिया साहिबे-मोजिज़ात थे, लेकिन जितने अज़ीम मोजिज़ात हज़रत ईसा ने किए किसी ने न किए। आपने बीमारों को शिफ़ा बख़्शी, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया, अंधों को बीनाई बख़्शी, बदरूहों को निकाला, समुंदरी तूफ़ान को साकिन कर दिया और यहाँ तक कि मुर्दों को ज़िंदा किया। न सिर्फ़ यह बल्कि आपने अपने शागिर्दों को भी बीमारों को शिफ़ा देने और मुर्दों को ज़िंदा करने की क़ुदरत बख़्शी।

लासानी तालीम

जब लोगों ने हज़रत ईसा को बोलते सुना तो बड़े हैरान हुए और कहा,

> इसे यह कहाँ से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो इसे मिली है, और यह मोजिज़े जो इसके हाथों से होते हैं, यह क्या है? (इंजील जलील, मरक़ुस 6:2)

उनके चंद लासानी फ़रमूदात मुलाहज़ा फ़रमाएँ।

> मुबारक हैं वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि वह अल्लाह को देखेंगे। (इंजील जलील, मत्ती 5:8)

> जिस किसी ने बुरी ख़्वाहिश से किसी औरत पर निगाह की वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका। (इंजील जलील, मत्ती 5:28)

> अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दे।
> (इंजील जलील, मत्ती 5:39)

> अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं।
> (इंजील जलील, मत्ती 5:44)

> हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें।
> (इंजील जलील, मत्ती 7:12)

> जो तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा ख़ादिम बने और जो तुम में अव्वल होना चाहे वह तुम्हारा ग़ुलाम बने। (इंजील जलील, मत्ती 20:26-27)

> देना लेने से मुबारक है।
> (इंजील जलील, आमाल 20:35)

> मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 13:34)

इस लासानी तालीम को सुनकर हम भी वही कहते हैं जो उस वक़्त लोगों ने कहा था।

> किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 7:46)

लासानी ग़ुरबत और फ़रोतनी

अगर कोई किसी मरीज़ का इलाज करके उससे इसका मुआवज़ा ले तो जायज़ है। इस तरीक़े से बहुत-से डाक्टर बड़े अमीर बन गए हैं। हज़रत ईसा भी उनसे सोना-चाँदी ले सकते थे जिन्हें आपने शिफ़ा बख़्शी। लेकिन आपने ऐसा कभी न किया। आपने न सिर्फ़ कुछ लेने से इनकार किया बल्कि ताजो-तख़्त क़बूल करने से भी इनकार कर दिया। एक मरतबा आपने पाँच रोटियों और दो

मछलियों से पाँच हज़ार को खाना खिलाया तो लोग आपको अपना बादशाह बनाना चाहते थे। लेकिन आपने इनकार कर दिया। एक रात आपने अपने शागिर्दों के पाँव धोकर उन्हें फ़रोतनी का नमूना दिया। और जब आपने मौत क़बूल की तो आपकी कुल जायदाद उन कपड़ों पर मुश्तमिल थी जो आप पहने हुए थे। गो आपने दूसरों को ज़िंदगी, शिफ़ा, खाना और नजात बख़्शी, लेकिन आपके पास अपना मकान तक भी न था!

लासानी मौत

हज़रत ईसा ने बार बार कहा कि मुझे यरूशलम में मसलूब किया जाएगा। जब एक शागिर्द ने यह सुना तो कहा,

> ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि यह कभी भी आपके साथ हो। (इंजील जलील, मत्ती 16:22)

लेकिन आपने पतरस को डाँटा और कहा,

> मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की। (इंजील जलील, मत्ती 16:23)

जब आप 33 साल के थे तो आपकी मौत का वक़्त आ पहुँचा। आपके दुश्मनों ने आपको गिरिफ़्तार करने के लिए रात को सिपाही भेजे। आपके शागिर्द मुक़ाबला करना चाहते थे लेकिन आपने उन्हें रोक दिया। बाद में जब आपके दुश्मन आपका ठट्ठा उड़ाने और आपको मारने लगे तो आप ख़ामोश रहे। दूसरे दिन जब सिपाहियों ने आपके हाथ-पाँव में कील ठोंके, तो आपने अपने तमाम दुश्मनों को दुआ दी। आपने फ़रमाया,

> ऐ बाप, इन्हें माफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं। (इंजील जलील, लूक़ा 23:34)

और जब आप सलीब पर लटके हुए थे तो सरदार नज़दीक आकर आपका तमस्ख़ुर उड़ाते थे, लेकिन आप फिर भी ख़ामोश रहे। फिर आप छः घंटे सलीब पर रहने के बाद ज़ोर से चिल्लाए और कहा,

> ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। (इंजील जलील, लूक़ा 23:46)

फिर मौत का तलख़ प्याला पी लिया। क्या ताज्जुब कि जो रोमी अफ़सर सलीब के पास खड़ा था वह बड़ा हैरान हुआ।[1]

[1] मत्ती 27:54; मरक़ुस 15:39; लूक़ा 23:47

अगर आप चाहते तो अपने आपको बचा सकते थे। लेकिन आप अपनी आज़ाद मरज़ी से मरे ताकि लोगों के गुनाहों की सज़ा ख़ुद बरदाश्त करें जैसे कि यसायाह नबी ने पेशगोई की थी।

> उसे हमारे ही जरायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की ख़ातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शिफ़ा मिली। हम सब भेड़-बकरियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सबके क़ुसूर का निशाना बनाया। उस पर ज़ुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे ज़बह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने ख़ामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।
> (सहायफ़े-अंबिया, यसायाह 53:5-7)

आपका शागिर्द यूहन्ना ने आपको सलीब पर जान देते देखा। बाद में उसने अपने आक़ाओ-मौला के मुताल्लिक़ लिखा,

> वही हमारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा देनेवाली क़ुरबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों का भी। (इंजील जलील, 1 यूहन्ना 2:2)

लासानी क़ियामत

हज़रत ईसा फ़ौत होकर दफ़न हुए, लेकिन आपका जिस्म ख़ाक में न मिला। आप मुर्दों में से जी उठे जिस तरह आपने पेशगोई की थी। इतवार के दिन आप क़ब्र से बाहर आ गए, हालाँकि दुश्मनों ने उस पर मुहर लगाकर पहरा बिठा दिया था। फिर आप चालीस दिन तक मुतअद्दिद शागिर्दों को मुख़तलिफ़ मक़ामात पर मिलते रहे। जिन्हें यक़ीन न था उन्होंने ख़ुद अपनी आँखों से देख लिया कि आप ज़िंदा हैं।

फिर वह अपने शागिर्दों के सामने सऊद फ़रमा गए। सिर्फ़ हज़रत ईसा ही मरकर जी उठे और अब फिर कभी नहीं मरने के। आपकी क़ियामत इस बात का पक्का सबूत है कि आप अल्लाह के फ़रज़ंद और दुनिया के नजातदहिंदा हैं।

दुबारा आने की लासानी पेशगोई

हज़रत ईसा ने मुतअद्दिद बार अपनी आमदे-सानी के मुताल्लिक़ बताया। आपने अपने शागिर्दों से कहा कि मेरी आमद और अपनी ज़िंदगियों का हिसाब देने के लिए तैयार रहो। आपने फ़रमाया कि मैं रोज़े-क़ियामत आसमान से आऊँगा, और हर आँख मुझे आते देखेगी। मैं अपने जलाली तख़्त पर बैठूँगा और तमाम क़ौमों का इनसाफ़ करूँगा। जिन्होंने मुझे क़बूल किया हो वह अबदी ज़िंदगी के वारिस होंगे जब कि जिन्होंने मुझे रद्द किया हो उन्हें अबदी हलाकत की सज़ा मिलेगी। वह घड़ी उनके लिए कितनी भयानक होगी!

लासानी रुतबा

हज़रत ईसा का रुतबा दीगर आदमियों से कहीं बुलंद है। आपके लक़ब भी इस बात का सबूत हैं। अहले-इसलाम आपको रूहुल्लाह और कलिमतु-ल्लाह जैसे अर्फ़ाओ-आला अल्क़ाब से पुकारते हैं। लेकिन आपका सबसे आला लक़ब अल्लाह का फ़रज़ंद है। आपकी बा-बरकत पैदाइश से पहले हज़रत जिब्राईल ने आपकी वालिदा बीबी मरियम को बताया था कि

> वह अज़ीम होगा और अल्लाह तआला का फ़रज़ंद कहलाएगा। (इंजील जलील, लूक़ा 1:32)

आपने ख़ुदा को उमूमन “मेरा बाप” कहकर पुकारा, और दो मौक़ों पर हक़ तआला ने भी आपको “मेरा फ़रज़ंद” कहा है। जब एक शागिर्द ने कहा कि

> ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 14:8)

तो आपने जवाब दिया,

> मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’? क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझ में है?
> (इंजील जलील, यूहन्ना 14:9-10)

> मैं और बाप एक हैं। (इंजील जलील, यूहन्ना 10:30)

दुनिया पर लासानी असर

हज़रत ईसा ने ख़ुद न कोई किताब तहरीर की और न कोई जंग लड़ी। आपने कोई बादशाहत क़ायम न की। आपकी ज़्यादातर ज़िंदगी एक छोटे से क़सबे में गुज़री जहाँ आप बढ़ई का काम करते थे। आपकी रूहानी ख़िदमत भी सिर्फ़ साढ़े तीन साल की थी। लेकिन इन तमाम बातों के बावुजूद हज़रत ईसा आज भी दुनिया के मक़बूलतरीन शख़्स हैं। तौरेत, ज़बूर और इंजील जलील का हज़ारों ज़बानों में तरजुमा हो चुका है, और उनकी फ़रोख़्त दुनिया की हर किताब से ज़्यादा है। हज़ारों मर्द और ख़वातीन अपने आबाई वतनों को छोड़कर दुनिया के कोने कोने में लोगों को आपके मुताल्लिक़ बताने गए हैं। क़रीबन दुनिया के तमाम ममालिक में ऐसे लोग और ग्रूप मौजूद हैं जो हज़रत ईसा को प्यार करते, आपके नाम से कहलाने में फ़ख़र महसूस करते और ख़ुशी ख़ुशी अपनी जानें आपकी ख़ातिर क़ुरबान करने के लिए तैयार रहते हैं। इन लोगों ने आपकी मुहब्बत की ख़ातिर अपने हमजिंस इनसानों की मदद करने के लिए हज़ारों स्कूल, हस्पताल और यतीमख़ाने खोले हैं और लाखों आदमियों की जिस्मानी और रूहानी मदद का बाइस बने हैं। हक़ीक़त तो यह है कि हज़रत ईसा की ज़िंदगी और तालीम आज तक दुनिया को बेहतर बना रही है।

पैरोकारों में लासानी मौजूदगी

हज़रत ईसा ने सऊद से पहले न सिर्फ़ अपनी आमदे-सानी के मुताल्लिक़ बताया बल्कि अपने शागिर्दों से वादा भी किया कि मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा। आपने फ़रमाया,

> देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ। (इंजील जलील, मत्ती 28:20)

एक और मौक़े पर आपने कहा था,

> जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।
> (इंजील जलील, मत्ती 18:20)

चुनाँचे जब हुज़ूर अल-मसीह सऊद फ़रमा गए तो आपके शागिर्द अकेले न रहे। किसी दूसरे को आने की ज़रूरत न थी जो उनकी देख-भाल करे, क्योंकि आप ख़ुद रूहुल-क़ुद्स के वसीले से उनके साथ हैं और दुनिया के आख़िर तक उनके साथ ही रहेंगे। आप ख़ुद उनकी राहनुमाई करते, उन्हें ताक़त और इतमीनान बख़्शते और उन्हें गुनाहों से पाक करते हैं। चूँकि आप ज़िंदा हैं और हमेशा ज़िंदा रहेंगे इसलिए आप हर तरह से हमारी मदद करने के क़ाबिल

हैं। आप हर शख़्स को बुलाते हैं ताकि उसे आराम दें। आपने फ़रमाया,

> ऐ थकेमाँदे और बोझ-तले दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा।
> (इंजील जलील, मत्ती 11:28)

हुज़ूर अल-मसीह की ज़ाते-लासानी

ग़रज़ हम यह कह सकते हैं कि ज़ाते-मसीह वाक़ई लासानी है। आपकी हर बात लासानी है। लेकिन शायद हमारे लिए सबसे अजीब बात यह है कि हुज़ूर अल-मसीह हमारे गुनाहगार दिलों में सुकूनत करने के लिए तैयार हैं। आपने फ़रमाया,

> देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटा रहा हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोले तो मैं अंदर आकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ। (इंजील जलील, मुकाशफ़ा 3:20)

अज़ीज़ दोस्त! यह लासानी नजातदहिंदा आज आपके दिल के दरवाज़े पर खड़ा है और अंदर दाख़िल होना चाहता है। हज़रत ईसा आपको बचाने के लिए मुए और आपको हमेशा की ज़िंदगी

देने के लिए ज़िंदा हैं। हुज़ूर अल-मसीह आपकी तमाम फ़िकरें, तमाम दुख, आपके गुनाह, ख़दशात और ज़रूरियात जानते हैं। वह आपकी मदद करना चाहते हैं। आप इस वक़्त भी अपना दिल खोलकर उनको अंदर बुला सकते हैं। तौरेत, ज़बूर और इंजील शरीफ़ का मुतालआ कीजिए तो आपको मज़ीद मालूम होगा कि हज़रत ईसा सचमुच लासानी हैं।